International Journal of Applied Research 2016; 2(12): 411-413

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(12): 411-413
www.allresearchjournal.com
Received: 11-10-2016
Accepted: 13-11-2016

स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

'रेणु' की कहानियों में सामाजिक जीवन गाथा के मूल्य

स्मिता कुमारी

सारांश
'रेणु' ने अपनी कहानियों में अंचल–विशेष की समग्र विशेषताओं विविधताओं, ग्राम जीवन के बदलते परिवेश, भंगिमा, अकुलाहट, आक्रोश, घृणा, जीवन की आपाधापी, असंतोष, सामाजिक संपूर्णता, विराट, व्यापक यथार्थ, वास्तविकता, संक्रमण की वस्तु स्थिति आदि को सामाजिक परिवेश के द्वारा सार्थक जीवन–संदर्भों के अन्वेषण का सफल प्रयास किया है। साथ ही साथ सांस्कृतिक मर्यादा का अन्वेषण भी। व्यक्ति और जीवन मूल्य की वस्तुस्थिति को यही सामाजिक परिवेश उजागार भी करता है।

प्रस्तावना
रेणु ने अपनी कहानियों में वातावरण और देशकाल का निरूपण सूक्ष्मता के साथ किया है। उन्होंने सामाजिक परिवेश का अंकन बहुत ही सजगता के साथ किया है। 'पहलवान की ढ़ोलक' कहानी में परिवेश का चित्रण इस प्रकार है– ''मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव मयार्त्त की तरह थर–थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस–फूस की झोंपड़ियाँ में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य! अंधेरा और निस्तब्धता।''(1)
देशकाल और वातावरण का ऐसा रेखांकन करना 'रेणु' की कलम की ताकत थी। वे अपनी कहानियों की कथा–वस्तु समसामयिक घटनाओं से लेते थे। 'पहलवान की ढोलक' कहानी में लेखक ने सामाजिक ताना–बाना की पतनशीलता के आख्यान को शब्दबद्ध किया है।
रेणु 'रसप्रिया' कहानी में जाति प्रथा, अंधविश्वास और कला के सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। वे गाँव की भयंकर गरीबी को देखकर गहन सामाजिक व्यथा और पीड़ा को व्यक्त किये हैं। मिरदंगिया समाजिक उपेक्षाओं का शिकार होता है। एक गुणवान तिल–तिल कर मरता है और उसका सारा जीवन इसी पीड़ा में गुजरता है। समय के ठोकर से पंचकौड़ी सब कुछ सीख जाता है। जब वह मोहना को देखता है, तो उससे रहा नहीं जाता है। मिरंदगिया समाजिक नुस्खा भी जानता है और मोहना के प्रति उभरे भाव को व्यक्त करता है वह अपने अनुभव से पारिवारिक डॉक्टर की योग्यता पा लेता है। लोगों को सलाह भी देता है। गाँव में आज भी लोग घरेलू व्यवहार की चीजों से बीमारियों का निदान निकाल लेते हैं। इस कहानी में लेखक ने डायन की चर्चा की है, जो अंधविश्वास है, वर्तमान समय में इस विषय को लेकर समाज में कई अवांछित घटनाएँ घट जाती हैं, जो किसी भी सभ्य समाज में क्षम्य नहीं है। मिरदंगिया की ऊँगली टेढ़ी हो जाती है, इसके पीछे सामाजिक अंधविश्वास ही माना जाता है– ''हे दिनकर, किसने इतनी बड़ी दुश्मनी की? उसका बुरा हो।..... मेरी बात लौटा दे भगवान! गुस्से में कही हुई बातें। नहीं, नहीं। पाँचू, मैंने कुछ भी नहीं किया है। ज़रूर किसी डायन ने बाण मार दिया है।''(2)
'रेणु' ने सामाजिक परिवेश के ऐसी घटनाओं और समस्याओं को उजागार किया है, जो समाज में कमोबेश सब दिन से चली आ रही थी। संतान प्राप्ति, वंश बढ़ाने और काम की तृप्ति के लिए लोग कुछ भी कर जाते हैं और कोई भी कदम उठा लेते हैं। यह कहना कठिन है और यक्ष प्रश्न भी है। मिरंदगिया के साथ कार्य करने वाले अजोधादास से मोहना की माँ शादी करती है, लेकिन उसकी काम भावना कुंठित ही रहती है क्योंकि अजोधादास बूढ़ा था, और उसके बाद वह कमलपुर के नन्दू बाबू की संपर्क में आती है। 'रेणु' ने लिखा है– ''मोहना की बड़ी–बड़ी आँखें कमलपुर के नन्दू बाबू की आँखें–जैसी हैं.... ।''(3)
दरअसल रमपतिया पँचकौड़ी द्वारा छली गई थी, जिसके कारण वह टूट कयी थी और वह मिरदंगिया रसपिरिया का नाम नहीं सुनना चाहती थी। कहना न होगा कि रमपतिया का आक्रोश और उसकी समस्या सामाजिक परिवेश में आज भी कहीं–न–कहीं देखी जाती है, जो अपने प्रेमी द्वारा छली जाती है। जब मोहना उसकी बात करती, तो वह बिगड़ जाती है। लेकिन मातृत्व स्नेह में पुनः वह बह जती है। रेणु ने लिखा है– ''जब गुस्सायेगी तो बाघिन की तरह और जब खुश होती है तो गाय की तरह हुँकारती जाएगी और छाती से लगा लेगी। तुरंत खुश और, तुरंत नाराज..... ।''(4)

'तीसरी कसम, उर्फ मारे गये गुलफाम' में सामाजिक–जीवन की विभिन्न गति विधियों का दिग्दर्शन होता है। हिरामन गाँव में रहने वाले भोले–भोले इंसान हैं, जिसे दुनिया की आबोहवा से कोई संबंध नहीं है। गाँव के लोग शहर जाकर मेला–ठेला का आनंद उठाते हैं और हिरामन दोनों कार्य करता है– मेला भी देखता है और भाड़ा भी कमाता है। पलटदास, लाल मोहर, धुन्नी राम आदि उसी के गाँव के गाड़ीवान हैं। कहना न होगा कि ये सभी समाज के वे व्यक्ति हैं जो गाड़ी चलाते हैं वह भी पैसा के लिए। आंचलिक स्तर पर मौजूद गरीबी और रोजगार का यहाँ सम्यक स्वरूप द्रष्टव्य है। ग्रामीण जीवन में गाड़ी, लालटेन, बांस, बैल आदि का प्रयोग होता रहा है। प्रेमचंद ने जहाँ शहरी जीवन का तह–दर–तह वर्णन किया है, वहीं रेणु ने ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन का समग्रता में वर्णन किया है। लोग नौटंकी, आर के एक्स्ट्रा आदि देखने के लिए व्यग्र हो उठते थे। 'तीसरी कसम' उर्फ 'मारे गये गुलफाम' में रेणु ने इसी व्यग्रता और उत्कंठा को प्रस्तुत किया है। पलटदास हीराबाई को जब देखता है तो उसे साक्षात सीया सुकुमारी लगी और श्रद्धाभाव से जयकार करने का मन होने लगा। दरअसल पलटदास और उसके साथी शहरी परिवेश और नौटंकी वाली बाई से अपरिचित हैं।

'रेणु' का कथा–विन्यास निराले ढंग का है। उनके कथानक के स्वरूप को किसी नए पुराने आधार पर परिभाषित नहीं किया जा सकता है और न किसी के साथ उसे जोड़ा जा सकता है। उनके कथानकों में घटनाओं, परिस्थितियों, पात्रों और परिवेश का अद्भुत पारस्परिक तनाव दिखाई पड़ता है। कोई कथा सीधे नहीं चलती। एक विशेष संदर्भ से टकराकर कोई कहानी शुरू होती है और वह शुरू से ही सीधी चलने के स्थान पर परिस्थितियों, परिवेश और पात्रों को एक में लपेट लेती है। पात्र अकेला रहकर भी अकेला नहीं रहता है। उसके आसपास उसका जीवंत परिवेश होता है। उस परिवेश में उनके पात्र होते हैं। समस्याएँ होती हैं, परम्पराएँ होती है। रीति–रिवाज होते हैं और वह पात्र एक ही साथ अपने से टकराता है तथा अपने परिवेश के अनेक तत्वों से टकराता है। बहरहाल 'तीसरी कसम' कहानी की कथा वर्त्तमान के एक बिंदु से शुरू होती है। हिरामन के गाड़ी में हीराबाई बैठी हुई। वह इस तथ्य से अनजान है कि गाड़ी में हीराबाई बैठी हुई। वह इस तथ्य से अनजान होकर गाड़ी हाँक रहा है। उसे हीराबाई के होने का भान तो नहीं है लेकिन उसे एक मधुर उपस्थिति का अभास होता है। उसकी पीठ में गुदगुदी लग रही है, वह सोचता है कि इतने दिनों से गाड़ी पर लदनी कर रहा हूँ लेकिन ऐसा पहली बार हो रहा है। हिरामन की चेतना गुदगुदी से खुल जाती है और कहानी पीछे की ओर लौट जाती है, वह पिछली अप्रिय घटनाओं के मकड़े जाल में उलझ जाता है। कहना न होगा कि कथा शुरू होकर सरल रेखा में जाती है। वर्त्तमान और भूत के अनुभवों से वह सशंकित हो जाता है। हिरामन सोचता है– ''औरत है या चंपा का फूल! जब से गाड़ी में बैठी है गाड़ी मह– मह महक रही है।''[5]

सामाजिक परिवेश में लोग आपस में बैठकर बाते करते हैं। जीवन की हर पहलू पर चर्चाएं होती हैं और खैनी, बीड़ी, गांजा आदि का सेवन सामूहिक रूप से करते हैं। 'रेणु' ने इस कहानी में हिरामन की हीराबाई के प्रति आगाध श्रद्धा को उद्धृत किया है, वह अपनी मीता का ख्याल रखता है, पूछकर बीड़ी पीता है। जबकि गाड़ीवान का जैसा चरित्र होता है, वह खैनी और बीड़ी हमेशा पीता रहता है। लेखक ने लिखा है– ''हिरामन ने बीड़ी सुलगाने के पहले पूछा, ''बीड़ी पीयें? आपको गंध तो नहीं लगेगी?.....''[6] हिरामन गप रसाने का भेद जानता है। दरअसल शारीरिक श्रम करते समय लोग आपस में बातें करते रहते हैं, इससे उसका ध्यान बँटा रहता है और कार्य भी धीरे–धीरे होता रहता है। हिरामन का स्वभाव कुछ ऐसा ही यहाँ परिलक्षित होता है।

'रेणु' की साहित्यिक रचना का कालखंड बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से सातवें दशक के मध्य रहा है। तत्कालीन सामाजिक परिवेश, धार्मिक परिवेश और आर्थिक परिवेश को उन्होंने समग्रता से अपनी कहानियों में चित्रण किया है। आपसी वैमनस्य समाजिक स्तर पर किस तरह मौजूद रहती है, लाल पान की बेगम' कहानी में देखी जा सकती है। गाँव के लोग कितने उदार होते हैं कि सुबह में यदि किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ तो, वह चिर स्थायी नहीं होता है, शाम–होते–होते वह उसे भूल जाते हैं। बिरजू की माँ और जंगी की पुतोहू के बीच भोर में तनाव होता है, लेकिन रात मेला एक ही गाड़ी पर बैठ कर जाती है। रेणु ने लिखा है– ''अरी टीशनवाली, तू रोती है काहे! बिरजू की माँ ने पुकर कर कहा, ''आ जा झट से कपड़ा पहनकर। सारी गाड़ी पड़ी हुई है! बेचारी!..... आ जा जल्दी!..... आज जा! जो बाकी रह गयी हैं, सब आ जायें जल्दी!'' जंगी की पुतोहू, लरेना की बीबी और राधे की बेटी सुनरी तीनों गाड़ी के पास आई।''[7]

दरअसल 'रेणु' ने सामाजिक परिवेश का अंकन फिल्मकार की भांति किया है, उन्होंने सूक्ष्म से सूक्ष्म तथ्य को टटोल–टटोल कर बाहर किया और अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों को रू–ब–रू कराया। दूसरे की उन्नति से समाज के लोग इस प्रकार जलते हैं कि लगता है वह स्वयं को खत्म कर लेगा। ''लाल पान की बेगम' कहानी में रेणु ने ऐसी ही छोटी–छोटी बातों को रेखांकित किया है। और ऐसी परिस्थितियों में वाद–विवाद कुछ इस प्रकार होता है– ''बिरजू की माँ के मन में रह–रहकर जंगी की पुतोहू की बातें चुभती हैं भक्–भक् बिजली–बत्ती!..... चोरी–चमारी करने वाले की बेटी–पुतोहू जलेगी नहीं! पाँच बीघा जमीन क्या हासिल की है बिरजू के बप्पा ने, गाँव की भाईखौकियों की आँखों में किरकिरी पड़ गयी है। खेत में पाट लगा देखकर गाँव के लोगों की छाती फटने लगी।''[8] इस कहानी में दाम्पत्य जीवन की झांकियाँ बेहद खूबसूरत है। पति–पत्नी के बीच अन्यमस्क प्रेम का रूप स्पष्ट होता है। बिरजू के बाप समय से गाड़ी, लेकर नहीं आते हैं और उसकी माँ निराशा की सागर में डूब जाती है। बच्चों पर वह अपनी खीझ निकालती है। वह अपने बच्चे सहित सो जाती है, लेकिन जब गाड़ी लेकर आते हैं, तो उनके मन की मैल धूल जाती है। भोर से शाम तक जिस पीड़ा से गुजरी थी, वह सारी वेदना, दुख–दर्द, मानसिक चिंता एक पल में ही छूमंतर हो जाती है, जब बिरजू के बाप कहते हैं–

''बिरजू की माँ के मन में आया कि कसकर जबाब दे, नहीं देखना नाच! लौटा दो गाड़ी!..... बिरजू की माँ उठकर ओसारे पर आयी– ''डेढ़ पहर रात को गाड़ी लाने की क्या जरूरत थी? नाच तो अब खत्म हो रहा होगा।'' ढिवरी की रोशनी में धान की बालियों का रंग देखते ही बिरजू की माँ के मन का सब मैल दूर हो गया। .....धान का रंग उसकी आँखों में उतरकर रोम–रोम में घुल गया।''[9] कथाकार ने इस कहानी में धार्मिक आस्था और अंधविश्वास जैसी धारणाओं का भी चित्रण किया है। तत्कालीन समाज में गरीबी की स्थिति अत्यंत भयावह थी। लोगों को दो जून की रोटी भी मुश्किल से मिलती थी। ऊपर से ऋण चक्र जैसी दमनकारी प्रथा समाज की रीढ़ तोड़ रही थी। उपर्युक्त सभी समस्याओं का रेणु ने इस कहानी में बखूबी चित्रण किया है। गरीबी की दारूण स्थिति के चित्र की बानगी रेणु ने इस प्रकार व्यक्त किया है– ''जब तक दोनों बैल दाना–घास खाकर एक–दूसरे की देह को जीभ से चाटें, बिरजू की माँ तैयार हो गई। चम्पिया ने छींट की साड़ी पहनी और बिरजू बटन के अभाव में पैंट पर पटसन की डोरी बँधवाने लगा।''[10]

समग्रतः रेणु ने अपनी कहानियों में सामाजिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश, ग्रामीण परिवेश, धार्मिक परिवेश, आर्थिक परिवेश आदि को कलमबद्ध करने में जीवन खपा दिया तथा एक तटस्थ काल प्रेक्षक की भांति अवलोकन करते हुए जन–जीवन की राग–विराग, अच्छाई–बुराई, नोंक–झोंक,

ताल–तलैया, घाट–घटवारिन आदि का वर्णन तनम्यता से किया है। आंचलिक जीवन चरित्र को चित्रित कर जनता के बीच रखने में रेणु का कोई शानी नहीं था। उन्होंने आंचलिक भाषा–शैली का प्रयोग करके हिंदी साहित्य को एक नयी दशा और दिशा दी। इसलिए कहा जाए कि 'रेणु' आंचलिक कथा साहित्य के महासागर हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि वे आंचलिक साहित्य के देदीप्यमान सितारे थे।

संदर्भ–सूची :

1. सम्पूर्ण कहानियाँः रेणु, पृ0–13
2. रसप्रिया : रेणु पृ0–15
3. रसप्रिया : रेणु पृ0–18
4. रसप्रिया : रेणु पृ0–19
5. तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम : रेणु पृ0–112
6. तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम : रेणु पृ0–115
7. लाल पान की बेगम : रेणु पृ0–30
8. लाल पान की बेगम : रेण पृ0–25
9. लाल पान की बेगम : रेणु की आंचलिक कहानियाँ : दक्षिणेश्वर रेणु, रेणु पृ0–28
10. लाल पान की बेगम : रेणु की आंचलिक कहानियाँ : दक्षिणेश्वर रेणु, पृ0–30